Website: AgricultureSupervisor.com

राजस्थान एग्रीकल्चर सुपरवाइजर परीक्षा की तैयारी के लिए एक भरोसेमंद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है। यहां उम्मीदवारों को **Agriculture Supervisor Syllabus 2025**, विषयवार विस्तृत सिलेबस, **Hindi में PDF डाउनलोड**, नवीनतम नोटिफिकेशन, और **ऑनलाइन मॉक टेस्ट** की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। वेबसाइट पर **Rajasthan Agriculture Supervisor Exam**, **RSMSSB Agriculture Supervisor Syllabus**, और प्रैक्टिस आधारित **online test series** के माध्यम से अभ्यर्थी अपनी तैयारी को मजबूत बना सकते हैं। यह प्लेटफॉर्म सिलेबस कवरेज, रिवीजन और परीक्षा-उन्मुख अभ्यास के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है।

Rajasthan Agriculture Supervisor Syllabus 2026

Agriculture Supervisor Syllabus 2025 Rajasthan Subordinate and Ministerial Services Selection Board (RSMSSB) द्वारा आयोजित Agriculture Supervisor भर्ती परीक्षा की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के लिए जारी किया गया नवीनतम और आधिकारिक सिलेबस है। इस सिलेबस में **General Hindi, Rajasthan GK, Agriculture Science, Horticulture और Animal Husbandry** से संबंधित सभी महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं।

उम्मीदवार यहां **Agriculture Supervisor Syllabus PDF in Hindi**, विषयवार टॉपिक्स, प्रश्न वितरण और परीक्षा से जुड़े आवश्यक अपडेट एक ही स्थान पर प्राप्त कर सकते हैं। यह सिलेबस Rajasthan Agriculture Supervisor Exam की तैयारी को आसान और लक्ष्य-केंद्रित बनाने में सहायक है।

Rajasthan Agriculture Supervisor Syllabus 2026 in Hindi

भाग-I: सामान्य हिंदी

- दिए गए शब्दों की संधि एवं शब्दों का संधि-विच्छेद
- उपसर्ग एवं प्रत्यय – इनके संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग व प्रत्यय को पृथक करना, इनकी पहचान
- समास (सामासिक) पद की रचना करना, समास (सामासिक) पद का विग्रह करना

- शब्द-युग्मों का अर्थ भेद
- पर्यायवाची शब्द एवं विलोम शब्द
- शब्द-शुद्धि – दिए गए अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना
- वाक्य-शुद्धि – वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को छोड़कर वाक्य संबंधी अन्य व्याकरणिक अशुद्धियों का शुद्धिकरण
- वाक्यांश के लिए एक उपयुक्त शब्द
- पारिभाषिक शब्दावली – प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिंदी शब्द
- मुहावरे – वाक्यों में केवल अर्थ के प्रयोग अपेक्षित हैं
- लोकोक्ति – वाक्यों में केवल अर्थ के प्रयोग अपेक्षित हैं

भाग-II: राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

- राजस्थान की भौगोलिक संरचना – भौगोलिक विभाजन, जलवायु, प्रमुख पर्वत, नदियाँ, मरुस्थल एवं फसलें
- राजस्थान का इतिहास
- सभ्यताएँ – कालीबंगा एवं आहड़
- प्रमुख व्यक्तित्व – महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, राव जोधा, राव मालदेव, महाराजा जसवंतसिंह, वीर दुर्गादास, जयपुर के महाराजा मानसिंह-प्रथम, सवाई जयसिंह, बीकानेर के महाराजा गंगासिंह आदि
- राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार, लोक कलाकार, संगीतकार, गायक कलाकार, खेल एवं खिलाड़ी
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान का योगदान एवं राजस्थान का एकीकरण
- विभिन्न राजस्थानी बोलियाँ, कृषि, पशुपालन क्रियाओं की राजस्थानी शब्दावली
- कृषि, पशुपालन एवं व्यावसायिक शब्दावली
- लोक देवी-देवता – प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय
- प्रमुख लोक पर्व, त्यौहार, मेले-पशु मेले
- राजस्थानी लोक कथा, लोक गीत एवं नृत्य, मुहावरे, कहावतें, फड़, लोक नाट्य, लोक वाद्य एवं कठपुतली कला
- विभिन्न जातियाँ – जन जातियाँ
- स्त्री-पुरुषों के वस्त्र एवं आभूषण
- चित्रकारी एवं हस्तशिल्पकला – चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, भित्ति चित्र, प्रस्तर शिल्प, काष्ठ कला, मृदमंड (मिट्टी) कला, उस्ता कला, हस्त आभूषण, नक्षे-गली छाप आदि
- स्थापत्य – दुर्ग, महल, हवेलियाँ, छतरियाँ, बावड़ियाँ, तालाब, मंदिर-मस्जिद आदि
- संस्कार एवं रीति-रिवाज
- धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल

भाग-III: कृषि विज्ञान

- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, कृषि एवं कृषि सांख्यिकी का सामान्य ज्ञान

- राज्य में कृषि, उद्यानिकी एवं पशुधन का परिदृश्य एवं महत्व
- राजस्थान की कृषि एवं उद्यानिकी उत्पादन में मुख्य बाधाएँ
- राजस्थान के जलवायु विभाग, मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता
- क्षारीय एवं उसर भूमियाँ, अम्लीय भूमि एवं इनका प्रबंधन
- राजस्थान में मृदाओं के प्रकार, मृदा क्षरण, जल एवं मृदा संरक्षण के तरीके
- फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व, उपलब्धता एवं स्रोत
- राजस्थानी भाषा में पारंपरिक कृषि क्रियाओं की शब्दावली
- जैव-खादों का महत्व, प्रकार एवं बनाने की विधियाँ
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम उर्वरक, एकल, मिश्रित एवं यौगिक उर्वरक एवं इनके प्रयोग की विधियाँ
- फसल उत्पादन में सिंचाई का महत्व, सिंचाई के स्रोत, फसलों की जल माँग एवं प्रभावित करने वाले कारक
- सिंचाई की विधियाँ – विशेषतः फूलवाड़ा, बूंद-बूंद, रेनगन आदि
- सिंचाई की आवश्यकता, समय एवं मात्रा
- जल निकास एवं इसका महत्व, जल निकास की विधियाँ
- राजस्थान के संदर्भ में पारंपरिक सिंचाई से संबंधित शब्दावली
- मृदा परीक्षण एवं समस्याग्रस्त मृदाओं का सुधार
- सूखा, ओलावृष्टि, चारा संरक्षण
- खरपतवार – विशेषताएँ, वर्गीकरण, खरपतवारों से हानि, खरपतवार नियंत्रण की विधियाँ, राजस्थान की मुख्य फसलों में खरपतवारनाशी रसायनों से खरपतवार नियंत्रण
- खरपतवारों की राजस्थानी भाषा में शब्दावली
- मुख्य फसलों के लिए जानकारी:
    - अनाज वाली फसलें: मक्का, ज्वार, बाजरा, धान, गेहूँ, जौ
    - दालें: मूंग, चना, मटर, उड़द, मेथी, चना, मटर
    - तिलहन फसलें: मूंगफली, तिल, सोयाबीन, सरसों, अलसी, अरंडी, सूरजमुखी, तारामीरा
    - रेशेदार फसलें: कपास
    - चारा वाली फसलें: बरसीम, राइजका, जई
    - मसाले वाली फसलें: सौंफ, मेथी, जीरा, धनिया
    - नकदी फसलें: ग्वार, गंगा
- अन्य महत्वपूर्ण विषय:
    - उत्तम बीज के गुण, बीज अंकुरण एवं इसे प्रभावित करने वाले कारक
    - बीज वर्गीकरण, मूल केंद्र बीज, प्रजनन बीज, आधार बीज, प्रमाणित बीज
    - शुष्क खेती – महत्व, शुष्क खेती की तकनीक
    - मिश्रित फसल – प्रकार एवं महत्व
    - फसल चक्र – महत्व एवं सिद्धांत
    - राजस्थान के संदर्भ में कृषि विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी
    - अनाज एवं बीज का भंडारण

भाग-IV: उद्यानिकी

-
- उद्यानिकी फलों एवं सब्जियों का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य
- फलदार पौधों की नर्सरी प्रबंधन
- पौध प्रवर्धन, पौध रोपण
- फल/सब्जी खेत के स्थान का चुनाव एवं योजना
- उद्यान लगाने की विभिन्न रेखांकन विधियाँ
- पाला, लू एवं अफलन जैसी मौसमी प्रतिकूलताएँ एवं समाधान
- फल/सब्जी खेत में विभिन्न पौध वृद्धि नियंत्रकों का प्रयोग
- सब्जी उत्पादन की विधियाँ एवं नर्सरी प्रबंधन
- राजस्थान में जलवायु, मृदा, उन्नत किस्में, प्रवर्धन विधियाँ, जैव खाद एवं उर्वरक, सिंचाई, कटाई, उपज, प्रमुख कीट एवं बीमारियाँ एवं नियंत्रण
- उद्यानिकी फसलें: आम, नींबू वर्गीय फल, अमरुद, अनार, पपीता, बेर, खजूर, आंवला, अंगूर, लहसुन, बिलाई, टमाटर, प्याज, फूलगोभी, पत्तागोभी, भिंडी, कद्दू वर्गीय सब्जियाँ, बैंगन, मिर्च, लहसुन, मटर, गाजर, मूली, पालक
- फल/सब्जी परिरक्षण का महत्व, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य
- फल परिरक्षण के सिद्धांत एवं विधियाँ
- डिब्बाबंदी, सुखाना एवं निर्जलीकरण की तकनीक एवं राजस्थान में पारंपरिक विधियाँ
- फलों से जैम, अवलेह (जेली), कैंडी, शर्बत, पाउडर आदि बनाने की विधियाँ
- औषधीय पौधों व फूलों की खेती का राजस्थान में सामान्य ज्ञान
- राजस्थान के उद्यान विभाग की महत्वपूर्ण योजनाएँ

भाग-V: पशुपालन

- कृषि में पशुपालन का महत्व
- पशुधन का दूध उत्पादन में महत्व एवं प्रबंधन
- पशुधन नस्लों की विशेषताएँ एवं उत्पत्ति:
    - गाय – गिर, थारपारकर, नागौरी, राठी, जसी, होलस्टीन फ्रीजियन, मालवी, हरियाणा, मेवाती
    - भैंस – मुर्रा, सूरती, नीली रावी, भदावरी, जाफरावादी, मेहसाना
    - बकरी – जमनापाड़ी, बारबरी, बीटल, टोगनबर्ग
    - भेड़ – मारवाड़ी, चाकला, मालपुरा, मेरीनो, कराकुल, जैसलमेरी, अविवस्त, अविकालीन
- ऊँट प्रबंधन, पशुओं की आयु गणना
- सामान्य पशु औषधियों के प्रकार, उपयोग, मात्रा तथा दवाइयाँ देने की विधि
- जीवाणुरोधी – फेनाइल, कार्बोलिक एसिड, बोरिक एसिड, बोरेक्स
- पत्तियों वाले औषधीय पौधे – नीम, ताड़ी का तेल
- परजीवीनाशक – नीला थोथा, फिनासिल
- मदन तेल – तारपीन का तेल

- पशुओं की मुख्य बीमारियाँ: पशु-प्लेग, खुरपका-मुँहपका, लगड़ी, एंथ्रेक्स, गलघोंटू, दुग्ध बुखार, रानीखेत, मुर्गियों की चेचक, मुर्गियों की खाँसी
- दुग्ध उत्पादन, दुग्ध एवं खीस संघटन, शुद्ध दुग्ध उत्पादन, दुग्ध परिरक्षण, दुग्ध परीक्षण एवं गुणवत्ता
- दुग्ध में वसा ज्ञात करना, अपेक्षित घनत्व, अम्लता, क्रीम पृथक्करण विधि एवं यंत्रों की आवश्यकता
- दही, पनीर व घी बनाने की विधि
- दुग्धशाला के बर्तनों की सफाई एवं जीवाणुरहित करना
- राजस्थान के पशुपालन क्रियाओं एवं गतिविधियों से संबंधित शब्दावली